ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.18, NO.1, JAN-JUNE,2023 /47

भारतीय इतिहास लेखन की विभिन्न अवधारणाओं का समीक्षात्मक अध्ययन

*राजबीर एवं **डॉ0 दिवाकर त्रिपाठी
*शोधछात्र– इतिहास एवं ** शोध पर्यवेक्षक
इतिहास संस्कृति एवं पुरात्त्तव विभाग
डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या

भारत में विदेशियों की शासन सत्ता स्थापित हो जाने के पश्चात् अठारहवीं सदी में कई यूरोपीय विद्वानों की रूचि भारतीय इतिहास एवं संस्कृति की ओर दिखाई देती है इनमें विलियम जोन्स, मैक्समूलर, जेम्स प्रिसेप, कोलब्रुक प्रमुख है। भारत में साम्राज्यवादी इतिहास लेखन के दृष्टिकोण के पीछे ब्रिटिश साम्राज्य की सुरक्षा एवं स्थायित्व की भावना प्रबल रूप से विद्यमान थी। औपनिवेशिक साम्राज्यवादी विचारधारा के इतिहासकारो में जेम्स मिल, एल्फिंसटन, आर. कूपलैण्ड, पर्सिवल स्पीयर आदि विद्वानों के नाम प्रमुखता से लिये जाते हैं। साम्राज्यवादी इतिहास लेखन के प्रतिक्रिया स्वरूप भारतीय विद्वानों ने राष्ट्रवादी इतिहास लेखन का दृष्टिकोण अपनाया। ब्रिटिश शासनकाल में इतिहास की राष्ट्रीय विचारधारा का प्रयोग अम्बिका चरण मजूमदार (ए.सी. मजूमदार), पट्टाभि सीतारमैया एवं पंजाब केशरी लाला लाजपत राय, राधा कुमुद मुखर्जी, के०पी० जायसवाल आदि ने किया। कालान्तर में इलाहाबाद मत ने राष्ट्रीय इतिहास लेखन को और विकसित किया। राष्ट्रीय इतिहास लेखन के इलाहाबाद मत के प्रमुख राष्ट्रीय इतिहासकरों में ताराचन्द, आर.पी. त्रिपाठी, बेनी प्रसाद एवं डॉ० बनारसी प्रसाद सक्सेना के नाम प्रमुखता से लिये जा सकते हैं। इटली के प्रमुख विचारक अन्तोनियो ग्राम्शी की प्रेरणा से रणजीत गुहा आदि विद्वानों ने इतिहास लेखन का उपाश्रयी दृष्टिकोण विकसित किया और इसके बाद इतिहास उत्तर आधुनिक दौर में प्रवेश कर गया। मानवीय रुचि इतिहास पर दृ ष्टि डाली जाये तो हमें विदित होगा कि, 'लेखन से पूर्व भाषा का जन्म हुआ था तथा उससे पहले बोली का पदार्पण हुआ है।'

भारतीय इतिहास लेखन में साम्राज्यवादी विचारधारयें– भारत का पहला महत्वपूर्ण इतिहास उपयोगितावादी जेम्स मिल ने लिखा। अग्रेंजों की भारत में शासन व्यवस्था

स्थापित होने के साथ ही यहाँ पर उन्होंने साम्राज्यवादी विचारधारा को प्रोत्साहन दिया। ब्रिटिश साम्राज्यवादी इतिहासकारों द्वारा इतिहास की साम्राज्यवादी विचारधारा को अपनाने का मूलभूत उद्देश्य भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की सत्ता को स्थायित्व एवं दृढ़ता प्रदान करना था। साम्राज्यवादी विचारधारा का प्रस्फुटन इतिहास के प्राच्यवादी विचारधारा में ही मौजूद थे। रोमिला थापर के अनुसार, यह अंशतः प्राच्यविद्या का एक पहलू था, जिसमें ज्ञान के उपयोग को शक्ति का एक स्वरूप समझने का सिद्धान्त अंतर्निहित है। इसी कारण ब्रिटिश वायसराय लार्ड कर्जन ने ऐसी विद्वता और ज्ञान को 'साम्राज्य की आवश्यक सामग्री कहकर उसे प्रोत्साहन देने की बात कही थी।' 1857 ई. की प्रथम स्वतंत्रता के लिए ब्रिटिश साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा को सर्वप्रथम चुनौती प्रस्तुत की, अतः अब उन्हें यह आवश्यक लगने लगा कि भारत में उनके शासन सत्ता के स्थायित्व के लिये आवश्यक है किस भारतीयों के धार्मिक रीति रिवाजों एवं परम्पराओं का अध्ययन किया जाये।

ब्रिटिश प्रशासक से इतिहासकार बनने वाले कुछ अन्य साम्राज्यवादी इतिहाकारों का इतिहास लेखन का मूलभूत उद्देश्य, ब्रिटिश साम्राज्य को स्थायित्व प्रदान करता तथा उनके शासन सत्ता के औचित्य को सिद्ध करना था। ये साम्राज्यवादी लेखन अपने इतिहास लेखन द्वारा यह प्रचारित करना चाहते थे कि भारतीय समाज की जड़ता को ब्रिटिश शासन एवं उसके कानूनों द्वारा ही तोड़ा जा सकता है। अतः वे यह कहना चाहते थे कि 'भारतीय जनता का हित इसी में है कि वे ब्रिटिश शासन के अधीन रहकर भी विकास करें, इसके पीछे साम्राज्य की सुरक्षा एवं स्थिरता की दृष्टि मुख्य रूप से विद्यमान थी।

साम्राज्यवादी ब्रिटिश इतिहासकारों ने प्रायः उन्हीं साक्ष्यों का प्रयोग किया जो उनकी साम्राज्यवादी विचारधारा को प्रमाणित कर सके, प्रशासक से इतिहासकार बने, विसेन्ट स्मिथ को एक महानतम् साम्राज्यवादी इतिहासकार माना जा सकता है। उसने अपनी सर्वप्रसिद्ध कृति अली। हिस्ट्री ऑफ इण्डिया (1924) में अपने साम्राज्यवादी दृष्टिकोण का परिचय दिया है। साम्राज्यवादी इतिहासकार एवं प्रशासक विसेन्ट स्मिथ इतिहास में मात्र महानतम शासकों एवं महान साम्राज्यों का ही उल्लेख करना उचित मानते हैं। अतः उन्होंने भारतीय इतिहास प्राचीन काल में अशोक, चन्द्रगुप्त द्वितीय एंव मध्यकाल में सम्राट अकबर को ही महान नायक माना है। अपने साम्राज्यवादी दृष्टिकोण के चलते उन्होंने विदेशी आक्रमणकारी सिकन्दर के भारत पर आक्रमण के बारे में विस्तार पूर्वक इस उद्देश्य से लिखा ताकि एशिया सेना की दुर्बलता को दिखाया जा सके। विसेन्ट स्मिथ भारतीय सभ्यता की उन्नत अवस्था एवं भारतीय कला के विकास को यूनानी कला की देन बताते हैं। विसेन्ट स्मिथ का यह कथन, इतिहास की साम्राज्यवादी विचारधारा का स्पष्ट प्रमाण है।

मध्यकालीन भारतीय इतिहास के सन्दर्भ में इलियट और डाउसन द्वारा आठ जिल्दों में लिखा गया ग्रन्थ ए हिस्ट्री ऑफ इण्डिया एंड टोल्ड वाय इट्स ओन हिस्टोरियन भी उनके साम्राज्यवादी विचारधारा का ही एक प्रयास है। हरवंश मुखिया ने अपनी किताब अकबर के शासन के दौरान इतिहासकारों और इतिहास में इलियट एवं डाउसन के इतिहास की साम्राज्यवादी विचारधारा को स्पष्ट करते हुये लिखा है,' यह मध्यकालीन भारत के फारसी में लिखे गये इतिहास ग्रन्थों के अंशों का अनुवाद था।' वायसराय लार्ड कर्जन, लार्ड मिण्टो आदि की घोषणाओं में सर्वप्रथम साम्राज्यवादी दृष्टिकोण उभरकर सामने आया। इतिहास की साम्राज्यवादी विचाराधारा को वेलेन्टाइन शिरोल, मार्ले–मिन्टों सुधार, रॉलेट समिति की रिपोर्ट, वर्नी लायेट एवं माण्टेग्यू चेम्सफोर्ड की रिपोर्ट द्वारा सुनियोजित रूप सामने रखा। एक साम्राज्यवादी इतिहासकार कूपलैण्ड महोदय ने लिखा था कि, ''भारतीय राष्ट्रवाद तो ब्रिटिश राज की ही सन्तति थी।''

सबार्ल्टन स्टडी (उपश्रयी अध्ययन) के अनिल सील एवं उनके अनुयायियों द्वारा 1968 ई0 के बाद इतिहास के साम्राज्यवादी विचारधारा को अपनाने का मुख्य उद्देश्य भारतीयों को यह बताना था कि, उन्हें अपने उत्थान के लिये ब्रिटिश शासन की अधीनता की परम आवश्यकता है। इस दृष्टिकोण के द्वारा वे भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की सुरक्षा एवं स्थायित्व को सुनिश्चित करना चाहते थे। भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् के साम्राज्यवादी इतिहासकार यह बताना चाहते थे कि भारत में राजनीतिक चेतना का संचार ब्रिटिश शासन की कृपा से ही संभव हो पाया था।

भारतीय इतिहास लेखन में राष्ट्रवादी विचारधारायें– इतिहास की राष्ट्रवादी विचारधारा साम्राज्यवादी विचारधारा के प्रतिक्रिया स्वरूप अस्तित्व में आयी। राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास को गौरवान्वित करने के प्रयास किये थे। इन्होंने भारत अतीत के इतिहास की गौरवपूर्ण

व्याख्या प्रस्तुत किया इन्होंने भारत को सोने की चिड़िया तथा गुप्तकाल को स्वर्ण युग की संज्ञा प्रदान की तथा ब्रिटिश शासन के लूट और शोषण की दास्तान प्रस्तुत की। सतीश चन्द्र ने इस विचारधारा के सन्दर्भ में लिखा है–आन्दोलन के विकास ने भारतीय इतिहासकारों को इतिहास लेखन को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया।

ब्रिटिश शासन काल में राष्ट्रवादी इतिहास लेखन के प्रमुख प्रतिनिधि के रूप में विनायक दामोदर सावरकर, लाला लाजपत राय, अम्बिकाचरण मजूमदार, रामचन्द्र गणेश प्रधान, पट्टाभि सीतारमैया, सुरेन्द्र नाथ बनजी, सी. एफ. एन्ड्रयूज, गिरजा मुखर्जी इत्यादि विद्वानों को ले सकते हैं।

अम्बिका चरण मजूमदार ने अपनी पुस्तक द इण्डियन नेशनल इवोल्यूशन, सी.वी. चिन्तामणि ने इण्डियन पोलिटिक्स सिन्स द म्यूटिनिटी एवं सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने ए नेशन इन द मेकिंग की रचना कर भारत में राष्ट्रीय विचारधारा के मत को पुष्टि किया।

काशीप्रसाद जायसवाल (के. पी. जासवाल) द्वारा लिखित हिन्दू पालिटिक्स राष्ट्रवादी भावना से ओत–प्रोत सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचना मानी जाती है। इस प्रकार के.पी. जायसवाल की कृतियों में इतिहास लेखन के राष्ट्रीय इतिहास की विचारधारा का चरमोत्कर्ष देखा जा सकता है। उनके द्वारा लिखित राष्ट्रीय इतिहास लेखन की सर्वप्रमुख विशेषता यह थी भारत की छवि का जीवन्त स्पष्ट सजीव एवं गौरवशाली रूप में प्रस्तुत किया है। एक राष्ट्रवादी इतिहासकार के रूप में उनका प्रयास सराहनीय है। राष्ट्रवाद देश को प्रगति के रास्ते पर ले जा सकता है।

इलाहाबाद स्कूल ऑफ हिस्ट्री (इलाहाबाद मत) ने राष्ट्रवादी इतिहास लेखन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका भूमिका निभाई। डॉ. ताराचन्द ने जो इलाहाबाद मत के प्रवर्तको में अग्रणी थे, Influence of islam on Indian Culture एवं कई खण्डों में History of freedom struggle लिखकर राष्ट्रवादी विचारों को दृढ़ता प्रदान की। विपिन चन्द्र ने इतिहासकार सरदेसाई के इस कथन को राष्ट्रीय एकता की भावना का परिचायक माना है।

इस प्रकार प्रतीत होता है कि राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने भारतीय राष्ट्रीय अस्मिता पर ब्रिटिश इतिहासकारों द्वारा किये गये प्रत्येक प्रहार का हर सम्भव विरोध करने की कोशिश की और वर्तमान के परिपेक्ष्य में प्राचीन भारतीय संस्कृति और सभ्यता के उच्च आदर्शों को प्रस्तुत करने की कोशिश की। इतिहासकार सुमित सरकार ने उचित ही लिखा है कि औपनिवेशक इतिहास को मुख्य रूप से अंग्रेजी शासन को कायम रखने और उसकी पुष्टि के लिये विकसित किया गया था। परन्तु इसका परिणाम पूर्णतया विपरीत हुआ। वह शीघ्र ही सीमित परन्तु शक्तिशाली देशभक्ति के दावों को प्रस्तुत करने का आधार बन गया। यह एक ऐसा आधार था जिसने इतिहास के राष्ट्रवादी उपागम द्वारा साम्राज्यवादी एवं साम्प्रदायिक इतिहासकारों को कड़ी चुनौती प्रस्तुत की।

इतिहास की उपाश्रयी विचारधारायें– उपाश्रयी अध्ययन (सबाल्टर्न स्टडी) नामक एक नवीन विचारधारा इतिहास लेखन में उभरकर आयी है यह आम जन मानस की चेतना, विचारधारा और उसके तौर तरीकों को इतिहास के पन्ने पर लाना ही इतिहास की उपाश्रयी विचारधारा का प्रमुख उद्देश्य है। इस विचारधारा के सभी इतिहासकारों में पूर्ण मतैक्य नहीं है, लेकिन परंपरागत इतिहासलेखन से इस सभी का असंतोष काफी स्पष्ट है।

इतिहास की उपाश्रयी विचारधारा से जुड़े हुए विद्वानों ने शाहिद अमीन एवं ज्ञानेन्द्र पाण्डे जैसे इतिहासकार इन उपाश्रयी विचारधारा के विद्वानों ने इसके उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि सबाल्टर्न स्टडीज' के प्रकाशित होने के पहले ही कई वर्षों में आम जनता इतिहास के पन्नों पर नजर आने लगी थी। सबार्ल्टन स्टडीज में हमारा प्रयास आम–जनता, गरीब, किसान, चरवाहा, कामगार, मजदूर, दलित जातियां, स्त्री समाज आदि की उदारावस्था तक ही सीमित न रहकर उसके सोच–विचार तक पहुँचने का है।

उपाश्रयी शब्द इटली के प्रख्यात मार्क्सवादी विचार एंतोनियो ग्राम्शी की रचनाओं से लिया गया है। भारत में उपाश्रयी इतिहास लेखन के प्रमुख इतिहासकार एंव सर्वटन स्टडीज का एक प्रमुख संस्थापक रणजीत गुहा को माना जाता है। रणजीत गुहा द्वारा सबार्टन स्टडीज के खण्ड–1 एंव खण्ड–2 का सम्पादन किया गया था। सबार्ल्टन स्टडीज गुट के विद्वानों ने अभिजात् वर्ग एवं मातहत वर्ग को पृथक कर मातहतों स्वायत्ताता पर बल दिया है। सबाल्टर्न स्टडीज के कार्यवाही जागृति ओर संस्कृति के मातहतों की स्वायतता के उपेक्षित आयाम को खोजने का प्रयास किया।

सबार्ल्टन स्टडीज ग्रुप का सर्वाधिक प्रमुख तर्क यह है कि अभिजात वर्ग का अस्तित्व दलित, गरीब, पिछडा एवं मातहत वर्ग पर टिका है। भारतीय राष्ट्रवाद के निर्माण एवं विकास में भी जनसाधारण की भूमिका को भुलाया नहीं जा सकता। अतः उपाश्रयवादियों ने इस बात पर खेद प्रकट किया है कि औपनिवेशिक भारत का इतिहास लेखन किस प्रकार शीघ्रता से भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास लेखन का रूप ले लेता है। प्रमुख गलती यह बताई जाती है कि राष्ट्रवाद के निर्माण और विकास में जनसाधारण ने स्वतः ही जो योगदान दिया, उसे इतिहास लेखकों ने नजर अन्दाज किया। अतं में राष्ट्र की स्वाभिमानी बनाने में योगदान को स्वीकार न करना ही एक ऐतिहासिक असफलता बन जाती है।

उपाश्रयवादी आर्थिक कारकों के अलावा भी अन्य कारकों को वर्ग संघर्ष का कारण मानते हे। उपाश्रयी या निम्न वर्गीय शब्दावली से हमारा तात्पर्य हर प्रकार के प्रमुख और मातहती दर्जे को चाहे पद आर्थिक या सांस्कृतिक शक्ति बाहुबल या सेना या फिर वर्ण, जाति या लिंग का श्रेष्ठता के आधार पर हो, इतिहास में दर्शाने की थी'' उपाश्रयीवादियों ने ग्रिसले के विपरीत भीड़ की संस्कृति का अध्ययन कर ऐन्ल्स परम्परा की तरह सामान्य व्यक्तियों को भी इतिहास के पन्नो पर स्थान दिया है। इससे स्पष्ट है कि यह अध्ययन बौनो, विकलागों का अध्ययन नहीं है, यह उस निम्न वर्गीय चेतना का अध्ययन है, जिसने पर्दे के पीछे रहकर अभिजनवादी इतिहास को गति, दिशा एवं अर्थ प्रदान किया।

भारतीय इतिहास लेखन में समाजवादी विचारधारा– सोशलिज्म अंग्रेजी और फ्रांसीसी भाषा का शब्द है जिससे हिन्दी का समाजवाद शब्द की उत्पत्ति हुई है। जो मुख्यतः 19वीं सदी के पूर्व में व्यक्तिवाद के विरोध में तथा समाज के आर्थिक और नैतिक आधार को बदलने के लिये अस्तित्व आया। इसका मुख्य लक्ष्य जीवन में व्यक्तिगत नियंत्रण के स्थान पर सामाजिक नियंत्रण स्थापित करना चाहते थे। इस शब्द का प्रयोग कभी–कभी परम्परा के विरोधी दृष्टान्तों जैसे समूहवाद, साम्यवाद, सैन्यवाद, ईसाईवाद यहाँ तक कि नात्सी दल (राष्ट्रीय समाजवादी दल) ने किया था।

भारत में समाजवादी समाजवाद की प्रमुख धारा महात्मा गांधी के विचारों का सभी धर्मों ही नहीं बल्कि टाल्सटाय, थोरो जैसे दार्शनिकों का भी स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। इन्होंने आर्थिक समानता, शोषण, बेरोजगारी के साथ–साथ तानाशाही राजनीति का विरोध करते हुये औद्योगीकरण का भी विरोध

किया समाजवाद की एक दूसरी विचारधारा मार्क्सवादी मानी जाती है। 'मार्क्स का विचार है कि सामाजिक विकास की प्रक्रिया में आर्थिक तत्वों की गहनता होती है और अधिक विकास में श्रम के साथ–साथ प्राकृतिक संसाधनों का भी विशेष महत्व था। मार्क्स ने इस अवधारणा की व्याख्या द्वन्दात्मक भौतिकवाद के आधार पर की है। इसे इतिहास की आर्थिक व्याख्या या ऐतिहासिक भौतिकवाद कहा गया है। इस विचारधारा का भारतीय इतिहास लेखन पर विशेष प्रभाव दिखाई देता है। भारत मार्क्सवादी इतिहासकारों में कृषकों, किसानों, कबीलों, मजदूरों के आन्दोलनों और पूंजीपति वर्ग एवं जमींदारों के साम्राज्यवाद और राष्ट्रवाद के संबंधों का विवेचन किया है। इस विचारधारा की ऐतिहासिक रचना ए0आर0 देसाई के द्वारा प्रतिपादित पीजेन्ट स्ट्रगल इन इण्डिया तथा के.एस. सिंह के द्वारा लिखित फोलो नियम ट्रान्स फार्मेसन ऑफ दि ट्राईवल सोसाइटी इन मिडिल इण्डिया जैसी प्रमुख पुस्तकें हैं। इस प्रकार का लेखन कार्य पूर्व से वर्तमान में निरन्तर चल रहा है।

प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन में रामशरण शर्मा ने किसान, मजदूर और गरीब लोगों पर विशेष ध्यान देते हुए इतिहास को लिखा इन्होनें अपनी रचना सामंतवाद में, सामंतवादी व्यवस्था में किसान गरीब, मजदूरों की दुर्दशा का विवरण किया है। मध्यकालीन भारतयीय मार्क्सवादी इतिहास लेखन में इरफान हबीब ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आधुनिक समाजवाद समय व परिस्थितियों के साथ–साथ बदलता रहा है। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू, क्रान्तिकारी सुभाषचन्द्र बोस जैसे नेताओं ने भी समाजवाद का प्रचार–प्रसार किया। सोवियत रूस की आर्थिक संकट से मुक्ति तथा उसकी सफलता को देखते हुए भारत के भी डॉ० राममनोहर लोहिया, अशोक मेहता, जयप्रकाश नारायण, आचार्य नरेन्द्र देव, मीनूमसानी, कमला देवी, यूसुफ मुहर अली, जैसे अनेक राष्ट्रभक्त समाजवाद की तरफ आकर्षित हुये।

सन्दर्भ

1. इतिहास की पुनर्व्याख्या, पृ0 सं0 17
2. विसेंट स्मिथ, अली हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, पृ0 सं0 422
3. वही, पृ0 सं0 403
4. मणिकांत सिंह, आधुनिक इतिहास लेखन सिविल सर्विसेज क्रानिकल, अगस्त 1999, पृ0 सं048
5. विपिन चन्द्र, आधुनिक भारत के इतिहासकार और साम्प्रदायिकता इतिहास की पुनर्व्याख्या, पूर्वोक्त, पृ0 सं0 119–20
6. सुमित सरकार, सामाजिक इतिहास लेखन की चुनौती, पूर्वोक्त, पृ0 सं0 28
7. शाहिद अमीन, ज्ञानेन्द्र पाण्डे निम्न वर्गीय इतिहास एक लघु प्रस्तावना इतिहास अंक–2, शोध पत्रिक आई0सी0एच0आर0 दिल्ली पृ0 सं0 287
8. वही, पृ0 सं0 288–89